प्रश्न - उत्तर →

निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए →

① टूटे से फिर ना मिले, मिले गाँठ परि जाय।

Ans → जब कोई धागा एक बार टूट जाता है तो फिर उसे जोड़ा नहीं जा सकता, जोड़ने की कोशिश में उस धागे में गाँठ पड़ जाती है, किसी से रिश्ता जब

एक बार टूट जाता है तो फिर उस रिश्ते को दोबारा जोड़ा नहीं जा सकता। उसमें पहले जैसा कुछ नहीं रहता।

(2) रहिमन अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।

अपने दर्द को दूसरों से छुपा कर ही रखना चाहिए। जब आपका दर्द किसी अन्य को पता चलता है तो लोग उसका मजाक ही उड़ाते हैं। कोई भी आपके दर्द को बाँट नहीं सकता। सभी आपके दर्द में आपका मजाक ही बनाते हैं अतः सही है कि आप अपने दर्द को अपने मन में ही रखें।

(3) रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै, फलै अघाय।
एक तार में कोई भी एक कार्य ही करना चाहिए। एक काम के पूरा होने से कई काम अपने आप हो जाते हैं। यदि एक ही साथ आप कई लक्ष्य को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे तो कुछ भी हाथ नहीं आता। यह वैसे ही है जैसे जड़ में पानी डालने से ही किसी पौधे में फूल और फल आते हैं।

(4)

Date
Page

(4) दीरघ दोहा अरथ के, आखर थोरे आँहि।

Ans → किसी भी दोहे में कम शब्दों में ही बहुत बड़ा अर्थ छिपा होता है। यह वैसे ही होता है जैसे नट की कुंडली होती है। नट अपनी कुंडली में सिमट कर तरह तरह के आश्चर्यजनक करतब दिखा देता है।

(5) नाद रीझि तन देत मृग, नर धन देत समेत।

Ans → हिरण किसी के संगीत से खुश होकर अपना शरीर न्योछावर कर देता है। इसी तरह से कुछ लोग दूसरे के प्रेम से खुश होकर अपना सब कुछ दे देते हैं। परन्तु कुछ लोग इतने स्वार्थी होते हैं कि वे दूसरों से तो बहुत कुछ ले लेते हैं लेकिन खुद बदले में कुछ भी नहीं देते।

(6) जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तरवारि।

Ans → जहाँ छोटी चीज की जरूरत होती है वहाँ पर बड़ी चीज बेकार हो जाती है। जैसे जहाँ सुई की ~~जरू~~ जरूरत होती है वहाँ तलवार का कोई काम नहीं होता। अतः किसी को छोटा समझ कर उसका मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए।

Date
Page

(7) पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुष, चून।

Ans→ बिना पानी के न तो मोती बनता है, न आटा गूंधा जा सकता है और पानी के बिना मनुष्य जीवन भी ~~असंभव असंभ~~ असंभव है।

→ निम्नलिखित भाव को पाठ में किन पंक्तियों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है-

(1) जिस पर विपदा पड़ती है वही इस देश में आता है।

Ans→ जा पर बिपदा पड़त है, सो आवत यह देस

(2) कोई लाख कोशिश करे पर बिगड़ी बात फिर बन नहीं सकती।

Ans→ बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय

(3) पानी के बिना सब सूना है अतः पानी अवश्य रखना चाहिए।

Ans→ रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।